INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS
VOLUME 3, ISSUE 11, NOVEMBER 2015 ISSN: 2320-2882(ONLINE)
ORIGINAL ARTICLE
Impact Factor: 0.345(GIF)
www.ijcrt.net

प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. यदु शर्मा
प्राचार्या
एस. एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर
हंसा शर्मा
पीएच. डी. शोधार्थी
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

प्रस्तावना–

गुरू को ईश्वर के समान उपमा देते हुए नमन किया गया है। किसी भी विद्यालय में शिक्षकों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। परन्तु शिक्षकों को मार्गदर्शन, निर्देशन व परामर्श प्रदान करने में प्रधानाध्यापक की भूमिका उससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। किसी संस्था का प्रधानाध्यापक प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण वाला है और उसका व्यवहार नेतृत्वपूर्ण है, उसमें भूमिका निष्पादन, संघर्ष, प्रबन्धन की क्षमता है तो निश्चित ही वह संस्था अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सबसे आगे रहेगी। इससे शिक्षकों का व्यवहार भी उसके प्रति सकारात्मक होगा तथा शिक्षकों में प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण विकसित होगा। जो विद्यार्थियों के हित में होगा। इसका लाभ सम्पूर्ण संस्था को प्राप्त हो सकेगा। तभी शिक्षक देश का भविष्य तैयार करने में सफल हो सकेंगे।

अध्ययन की आवश्यकता–

किसी विद्यालय की सफलता एवं विकास उसके मानव संसाधन पर निर्भर करती है। मानव संसाधन का महत्व इसलिए भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यह अन्य संसाधनों की देखरेख तथा नियंत्रण में सहायक होता है। मानव संसाधन का नेतृत्वकर्ता होने की भूमिका में

प्रधानाध्यापक ऐसी सभी गतिविधियों या कारकों को खोजकर समाप्त करने का कार्य करता है जो विद्यालय अथवा समूह के विकास में बाधक हों। इस प्रकार विद्यालय के नेता के रूप में प्रधानाध्यापक से अपेक्षा की जाती है कि वह संस्था में सकारात्मक बदलाव लायेगा। पेजा (1985) के अनुसार नेतृत्वकर्ता लगातार अपने वातावरण का अवलोकन करता है तथा यह पता लगाता है कि किस स्थान पर सुधार या परिवर्तन किया जा सकता है। इस प्रकार प्रधानाध्यापक का नेतृत्व व्यवहार विद्यालय के प्रभावी कार्य सम्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

वर्तमान समय में भारत में विश्व के विभिन्न विद्यालयों में हो रहे शोध कार्यों के अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश विद्यालयों में शिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट नहीं हैं। इस हेतु अधिकांश शोध प्रबन्ध विद्यालय नेतृत्व को इसका प्रमुख कारण मानते हैं। शोधकर्त्री द्वारा इस दिशा में किया जा रहा प्रयत्न भी इसी कड़ी का एक हिस्सा है जिसके माध्यम से राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का परीक्षण कर उसका शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य–

प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. लैंगिक आधार पर प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
2. भौतिक–सामाजिक परिवेश के आधार पर प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
3. विद्यालय के प्रकार के आधार पर प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–

न्यादर्श का चयन करने के लिए शोधकर्त्री ने राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के सरकारी एवं गैर सकारी विद्यालयों 400 शिक्षकों का चयन किया है। जिसमें 200 ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षक एवं 200 शहरी विद्यालयों के शिक्षक हैं तथा पुरूष एवं महिला शिक्षकों को समान अनुपात में लिया गया है।

उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में ''नेतृत्व व्यवहार स्तर परीक्षण'' स्वनिर्मित उपकरण एवं कार्य सन्तुष्टि परीक्षण डॉ. श्रीमती मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी–

उपकरण के माध्यम से संग्रहित किये गये आकड़ों का सारणीयन किया गया इसके बाद सहसम्बन्ध एवं टी–परीक्षण का उपयोग प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना–1 लैंगिक आधार पर प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–1

चर (Variable)	समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (x)	मानक विचलन ($\bigtriangledown$)	सहसम्बन्ध प्रभाव ($\divideontimes$)	टी–अनुपात (t)
नेतृत्व व्यवहार	पुरूष शिक्षक	200	151.00	43.29	0.24	0.29
कार्य सन्तुष्टि			152.10	45.21		
नेतृत्व व्यवहार	महिला शिक्षक	200	150.70	43.05	0.27	0.49
कार्य सन्तुष्टि			152.50	45.65		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश (N-1)= 199

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या–1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पुरूष शिक्षकों पर प्रशासित नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का गुणांक 0.24 प्राप्त हुआ जो कि धनात्मक सह–सम्बन्ध का प्रदर्शन करता है। सह–सम्बन्धित समूह पर आधारित टी अनुपात 0.29 प्राप्त

हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 0.05 एवं 0.01 दोनों ही स्तरों से कम है एवं महिला शिक्षकों पर प्रशासित नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का गुणांक 0.27 प्राप्त हुआ जो कि धनात्मक सह सम्बन्ध का प्रदर्शन करता है। सह–सम्बन्धित समूह पर आधारित टी अनुपात 0.49 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 0.05 एवं 0.01 दोनों ही स्तरों से कम है।

अतः पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु असार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना–2 भौतिक–सामाजिक परिवेश के आधार पर प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–2

चर (Variable)	समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (x)	मानक विचलन ($\bigtriangledown$)	सहसम्बन्ध प्रभाव ($\divideontimes$)	टी–अनुपात (t)
नेतृत्व व्यवहार	ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक	200	150.92	42.99	0.87	5.32
कार्य सन्तुष्टि			159.31	43.68		
नेतृत्व व्यवहार	शहरी क्षेत्र के शिक्षक	200	150.73	43.35	0.93	1.31
कार्य सन्तुष्टि			152.24	45.52		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश (N-1)= 199

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या–2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों पर प्रशासित नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का गुणांक 0.87 प्राप्त हुआ जो कि धनात्मक सह–सम्बन्ध का प्रदर्शन करता है। सह–सम्बन्धित समूह पर आधारित टी अनुपात 5.32 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 0.05 एवं 0.01 दोनों ही स्तरों से अधिक है।

अतः ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों के अनुसार शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु सार्थक प्रभाव पाया गया।

शहरी क्षेत्र के शिक्षकों पर प्रशासित नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का गुणांक 0.93 प्राप्त हुआ जो कि धनात्मक सह–सम्बन्ध का प्रदर्शन करता है। सह–सम्बन्धित समूह पर आधारित टी अनुपात 1.31 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 0.05 एवं 0.01 दोनों ही स्तरों से कम है।

अतः शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के अनुसार शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु असार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना–3 विद्यालय के प्रकार के आधार पर प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–3

चर (Variable)	समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (x)	मानक विचलन ($\bigtriangledown$)	सहसम्बन्ध प्रभाव ($\divideontimes$)	टी–अनुपात (t)
नेतृत्व व्यवहार	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	200	150.81	42.83	0.95	0.60
कार्य सन्तुष्टि			150.22	42.75		
नेतृत्व व्यवहार	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	200	150.84	43.51	0.94	3.00
कार्य सन्तुष्टि			154.41	47.87		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश (N-1)= 199

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या–3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय के शिक्षकों पर प्रशासित नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का गुणांक 0.95 प्राप्त हुआ जो कि धनात्मक सह–सम्बन्ध का प्रदर्शन करता है। सह–सम्बन्धित समूह पर आधारित टी अनुपात 0.60 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 0.05 एवं 0.01 दोनों ही स्तरों से कम है।

अतः सरकारी विद्यालय के शिक्षकों के अनुसार शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु असार्थक प्रभाव पाया गया।

गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षकों पर प्रशासित नेतृत्व व्यवहार का शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का गुणांक 0.94 प्राप्त हुआ जो कि धनात्मक सह–सम्बन्ध का प्रदर्शन करता है। सह–सम्बन्धित समूह पर आधारित टी अनुपात 3.00 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 0. 05 एवं 0.01 दोनों ही स्तरों से अधिक है।

अतः गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षकों के अनुसार शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु सार्थक प्रभाव पाया गया।

निष्कर्ष–

1. पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु असार्थक प्रभाव पाया गया।
2. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु सार्थक प्रभाव पाया जाता है परन्तु शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु असार्थक प्रभाव पाया गया।
3. सरकारी विद्यालय के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु असार्थक प्रभाव पाया गया। परन्तु गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का धनात्मक किन्तु सार्थक प्रभाव पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जोसेफ सी. रॉस्ट (1993) : लीडरशिप फॉर द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी, ग्रीनवुड पब्लिशिंग ग्रुप, संयुक्त राज्य अमेरिका

2. फील्डर एफ. ई. (1964) : ए थ्योंरी ऑफ लीडरशिप इफेक्टिवनेस। एडवांसेज इन एक्सपेरिमेंटल सोशियल साइकोलोजी, न्यूयार्क, एकडमिक प्रेस।
3. डॉ. मीरा दीक्षित– कार्य सन्तुष्टि परीक्षण (Job Satisfaction Scale for Primary and Secondary Teacher)
4. फ्रीमैन, एफ. एस., थ्योरी एण्ड प्रेक्टीस ऑफ साइकोलोजीकल टेस्टिंग, दी एडिसन आक्सफोर्ड एण्ड बी. एच. पब्लिकेशन कम्पनी